विचार बिन्दु

विचित्र बात है कि सुख की अभिलाषा मेरे दुःख का एक अंश है। –खलील जिब्रान

बदलते ज़माने में टीवी चैनलों का अनिश्चित भविष्य

एक समय जिस टीवी ने भारत में प्रिन्ट मीडिया और रेडियो के सामने जबरदस्त चुनौती खड़ी की थी, वह अब खुद अपने को चुनौतियों से घिरा पा रहा है। देश में टीवी चैनलों का भविष्य इस समय बहुत दिलचस्प मगर अनिश्चित मोड़ पर खड़ा है। नई तकनीक, दर्शकों की बदली हुई पसंद, और इंटरनेट की पहुंच ने टीवी इंडस्ट्री के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। परंपरागत समाचार टीवी चैनलों की गिरती लोकप्रियता ने उन्हें बाध्य किया है कि वे बड़े व्यावसायिक कारपोरेट घरानों के हाथों में चले जाएं। दूसरी तरफ मनोरंजन वाले टीवी चैनलों के टीआरपी आधारित ड्रामों के कंटेंट से दर्शक अब ऊबने लगे हैं। स्मार्टफोन की डिजिटल क्रांति ने भी टीवी चैनलों पर गहरी मार की है। शहरी और युवा दर्शक अब टीवी चैनलों के बजाय ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर फिल्में और टीवी सीरियल देखने को प्राथमिकता दे रहे हैं। घरों में सीमित रहने वाले अधेड़ ही अधिकतर अपने टीवी स्क्रीन पर चिपके हुए पाये जाते हैं। बाज़ार में अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए समाचार टीवी चैनलों के संचालकों को 'प्राइम टाइम' में मजमें लगाना सुरक्षित लगता है, जिसमें एंकर परंपरागत निष्पक्ष मध्यस्थ की भूमिका में सामने नहीं आता बल्कि रण के सैनिक के रूप में प्रस्तुत होता है। तेज रफ्तार से बदलती प्रौद्योगिकी को देखते हुए ऐसा सोचने वाले भी कम नहीं हैं कि भविष्य में टीवी चैनल डिजिटल ब्रांड्स में बदल जाने वाले हैं, और वे शायद केवल मोबाइल ऐप्स पर मौजूद मिलें। आश्चर्य नहीं कि लगभग हर बड़ा टीवी नेटवर्क अब अपना खुद का ओटीटी प्लेटफॉर्म भी लेकर आ रहा है।

विश्लेषकों का कहना है कि स्मार्ट टीवी ऐप्स और स्ट्रीमिंग सेवाएं युवा वर्ग को खूब भा रही हैं, जिससे नियमित चैनल सर्फिंग कम होती जा रही है। यूट्ययूब, इंस्टाग्राम, रील्स, और टिक–टॉक जैसे प्लेटफ़ॉर्म के साथ टीवी चैनलों की प्रतिस्पर्धा हो रही हैं। ख़ास तौर पर मनोरंजन, समाचार और जीवनशैली के कंटेन्ट के लिए यह प्रतिस्पर्धा जबरदस्त है। यही सब चीजें टीवी चैनलों के लिए नई चुनौतीयां बन कर खड़ी हैं। बाज़ार की समझ रखने वाले कहते हैं कि पारंपरिक प्रसारकों को भविष्य में कंटेंट क्रिएटर्स के साथ सहयोग करना पड़ सकता है। इस संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि 'मोबाइल–फ़र्स्ट' व्यवस्था के साथ तैयार किये गये शॉर्ट–फ़ॉर्म कंटेन्ट वाले चैनल उभर सकते हैं क्योंकि यह भी स्पष्ट लग रहा है कि युवा दर्शकों का रुझान शॉर्ट फॉर्म कंटेंट की ओर हो रहा है। फिर भी टीवी को पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार टीवी के हमले को झेलते हुए अखबार और रेडियो अपना स्थान बनाए रख पाये हैं उसी प्रकार टीवी भी नई चुनौतियों के सामने अपना वजूद बनाए रख ही लेगा। इसका एक बड़ा कारण है ग्रामीण भारत में टीवी की पकड़ का अब भी मजबूत बना होना। भारत के गांवों और कस्बों में अभी भी लोग डीटीएच और केबल के जरिए टीवी ज्यादा देखते हैं। गावों में लोगों की आर्थिक हालत सुधर रही है। उभरती हुई ग्रामीण अर्थव्यवस्था को देखते हुए बाज़ार के उत्पादकों तथा सेवा प्रदाताओं को ग्रामीण इलाकों में बड़ा बाज़ार नज़र आ रहा हैं। ग्रामीण उपभोक्ताओं तक पहुंच बनाने के लिए अभी टीवी चैनल प्रमुख माध्यम बने हुए हैं। इसलिए बाज़ार विश्लेषकों का मानना है कि टीवी चैनल अभी पूरी तरह खत्म नहीं होंगे। इतना जरूर है कि अपना वजूद बनाए रखने के लिए वे ग्रामीण और बुज़ुर्ग वर्ग पर केंद्रित होते चले जा सकते हैं।

वक़्त और टेक्नोलॉजी ने चीज़ों को हमेशा बदला है। इस दौर में भी बदलाव आ रहे हैं। मगर अब बदलाव की गति बहुत तेज हैऔर टीवी चैनल्स भी इससे अछूते नहीं रह सकते हैं। अब क्योंकि अर्थव्यवस्था पूरी तरह बाज़ार की पूंजी पर आधारित हो गई है इसलिए टीवी चैनलों पर भी बाज़ार का दबाव होना स्वाभाविक ही है। यही कारण है कि इन दिनों मीडिया संस्थान ज्यादातर व्यवसायिक दृष्टिकोण से संचालित होते हैं। क्योंकि एलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीविजन रेटिंग प्वाइंट्स (टीआरपी) पर विज्ञापन की आय निर्भर करती है इसलिए उस पर ध्यान केंद्रित करना ही पड़ता है। इस दबाव के कारण समाचार चैनलों को सच्चाई और निष्पक्षता से समझौता करते हुए खबरों को सनसनीखेज तरीके से प्रस्तुत करना पड़ता है और उनको समाचारों के प्रस्तुतीकरण को मनोरंजन वाला बनाने के लिए अपने कंटेन्ट में परंपरागत नैतिक तत्वों को तिलांजलि देनी पड़ती है। देश के राजनीतिक घमासान से भी टीवी चैनल अछूते नहीं रह सकते। अन्य मीडिया के समान उन पर, खास कर समाचार चैनलों पर, इसका दबाव होता ही है। मनोरंजन चैनल भी ऐसे विषयों को अपनाते से अपने को रोक नहीं पाते जिसमें वैचारिकता का पुट होता है। कई मीडिया संस्थान राजनीतिक दलों या सरकारों के प्रभाव में रहते हैं। इसके कारण, रिपोर्टिंग में पक्षपाती दृष्टिकोण अपनाया जाता है, जिससे दर्शकों या पाठकों को किसी न किसी राजनीतिक पक्ष के साथ जोड़ कर उसके लिये नेरेटिव बनाने का काम करे। इसके अलावा सभी प्रकार के टीवी चैनल अनेक वर्जनाएं भी तोड़ रहे हैं। विवाहेतर सम्बन्ध, स्वच्छंद यौन आचरण, बोलचाल में अश्लील गालियों का प्रयोग, वीभत्स हिंसा जैसी चीजें अब आम हो चली है। यह भारतीय समाज में आ रहे बदलाव के संकेत है या समाज को बदलने के प्रयास है इस पर मिलिजुली प्रतिक्रियाएं हैं।

बाज़ार विश्लेषकों की मानें तो भविष्य में केवल वही टीवी चैनल टिक पाएंगे जो अपने कंटेंट को नए जमाने के अनुसार अपडेट करते रहेंगे। आने वाले समय में डिजिटल तकनीक की पकड़ और गहरी होती चली जाने वाली है जिससे हाइपर-पर्सनलाइजेशन और कृत्रिम बुद्धि एआई का उपयोग बढ़ जाने वाला है। भविष्य में एआई की मदद से कंटेंट को दर्शकों की पसंद के हिसाब से कस्टमाइज़ किया जाएगा।

एक चीज स्पष्ट नज़र आती है कि डिजिटल अंतर्जाल पर यूट्ययूबरों के चैनल, पॉडकास्ट और ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर प्रदर्शित हो रहे अधिकतर कंटेन्ट समाज के उस नवधनाड्य वर्ग पर केंद्रित होते हैं जो बाज़ार के तिलस्म से मोहित हैं तथा जिनकी जेब में अचानक खूब पैसा आ गया है। मध्यम वर्ग की नई पढ़ी–लिखी पीढ़ी जो 'जेन–जी' के विशेषण से पहचानी जाती है, इसी वर्ग में शामिल होने को आतुर है। उनकी नई पनपी संस्कृति विभिन्न रूपों में हमारे सामने प्रकट होने लगी है। इस पीढ़ी को वर्जनाएं तोड़ना और अब तक वर्जित रही बातें करना और सुनना थ्रिल देता है। यह वह पीढ़ी है जो बाज़ारवाद वाली खुली अर्थव्यवस्था में पनपी है। पश्चिम की संस्कृति ने नये सोशल मीडिया के जरिए इस जेन–जी पीढ़ी में तेजी से पांव पसारे है। सोशल मीडिया की आभासी दुनिया ही जेन–जी के लिए असली दुनिया हो गई है। टीवी चैनलों के सामने यह चुनौती है कि इस पीढ़ी को लुभाने के लिए अपना उत्पाद कैसा कंटेन्ट वाला बनाए जो बाज़ार में उन्हें भरपूर मुनाफा कमा कर दे। किसी ने कहा है कि टीवी चैनल बाजारू कंटेन्ट बनाने और बेचने को शापित हैं। हिंदुस्तान में जेन–जी की नई संस्कृति में लिपटे नवधनाढ्य वर्ग में शामिल होने को आतुर युवाओं को लगता है कि ऐसे कंटेन्ट बनाकर मुफ़्त प्लेटफ़ॉर्म पर चला कर वे कमाई का साधन हासिल कर सकते हैं। इनमें पत्रकारिता को व्यवसाय मानने वाले भी धड़ाधड़ शामिल हो रहे हैं। उनके लिए समाचार भी मनोरंजन का व्यवसाय है। पत्रकारिता में गहरी और तथ्यपूर्ण रिपोर्टिंग के लिए समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो इसी के चलते अब बहुत कम हो गये हैं। आज का युग बहुतों के लिए फास्ट–फूड जैसी पत्रकारिता का हो चला है जहां खबरों को जल्दी से जल्दी प्रसारित करने का दबाव होता है। ऐसा करते हुए यह परवाह नहीं होती कि कहीं गलत जानकारी या अपुष्ट खबरें तो नहीं चलाई जा रही है। टीवी चैनलों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर तेजी से फैलने वाली सूचनाओं और बिना सत्यापित जानकारी का मुकाबला करना पड़ रहा है और वे भी उसी धारा में जाने–अनजाने बहे जा रहे हैं।कई बार टीवी चैनलों को बिना जांचे–परखे खबरें इसलिए प्रसारित करनी पड़ती हैं, ताकि सोशल मीडिया के मुकाबले में वे पिछड़ न जाएं। ऐसा अन्य मीडिया में भी हो रहा है। पारंपरिक मीडिया पर लोगों के घटते भरोसे का यह भी एक कारण है।

टीवी चैनलों का मुनाफे का मॉडल मीडिया संस्थानों को व्यापारिक हितों या बाहरी दबावों में काम करने को बाध्य करता है। इससे उनकी स्वतंत्रता से काम करने में बाधा आती है। इसका परिणाम यह होता है कि केवल एक दृष्टिकोण से ही प्रस्तुत की जाने वाली खबरें किसी विशिष्ठ पक्ष के दर्शकों के लिए तो आनंददायी होती है, किन्तु उससे अन्य दर्शकों का भरोसा टूटता है। पत्रकारिता के बुनियादी सिद्धांतों – जैसे निष्पक्षता, सत्यता, और निष्कलंकता–का पालन अब पहले जितना नहीं हो पाता है। बाज़ार विश्लेषकों की मानें तो भविष्य में केवल वही टीवी चैनल टिक पाएंगे जो अपने कंटेंट को नए जमाने के अनुसार अपडेट करते रहेंगे। आने वाले समय में डिजिटल तकनीक की पकड़ और गहरी होती चली जाने वाली है जिससे हाइपर–पर्सनलाइजेशन और कृत्रिम बुद्धि एआई का उपयोग बढ़ जाने वाला है। भविष्य में एआई की मदद से कंटेंट को दर्शकों की पसंद के हिसाब से कस्टमाइज़ किया जाएगा। बाज़ार नये ज़माने और नयी प्रौद्योगिकी की मांग के अनुरूप अपने उत्पादों में बदलाव लाने में माहिर होता है। इसीलिए घरों में टीवी भी स्मार्ट हो रहे हैं, जिन पर दिखने वाला कंटेंट रियल–टाइम में बदल सकता है, उसी प्रकार जैसे मोबाइल फोन में हुआ है। दूसरी तरफ चैनलों पर भी अपने कंटेंट को छोटा, तेज़, और मोबाइल–फ्रेंडली बनाने का दबाव बढ़ता जा रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत में टीवी चैनलों का भविष्य डिजिटल और मोबाइल–फोकस्ड है। विश्लेषकों का अनुमान है कि जो टीवी चैनल तकनीक, कंटेंट और दर्शकों की पसंद के साथ बदलेंगे और दर्शकों की पसंद को बदलेंगे वही टिकेंगे। बाकी सिर्फ इतिहास बनकर रह जाएंगे।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

पाश्चात्य विचार पर आधारित वन एवं वन्यजीव नीति ही दोषपूर्ण

रामपाल जाट

संयुक्त अरब अमीरात सरकार ने शेपिंग फ्यूचर गवर्नमेंट विषय के अंतर्गत वर्ल्ड गवर्नमेंट समिट 2025 का आयोजन किया था। वर्ष 2030 के बाद के दूरदर्शी मॉडल को विकसित करने के लिए,11 फरवरी 2025 को शिखर सम्मेलन के दौरान एक कार्यक्रम के रूप में एक्सडीजी–2045 मंत्री स्तरीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली अपनाते हुए वासुधैव कुटुंबकम की भावना के अनुसार समान वैश्विक साझेदारी, न्याय के सिद्धांतों, समावेशिता और साझा प्रगति को बढ़ावा देने के मार्गदर्शक सिद्धांत तैयार करने के लिए चर्चा की। इसमें भारतीय विचार हावी है किंतु जब भारत में नीतियां तैयार की जाती है, उनमें पाश्चात्य विचार ही प्रभावी दिखाई देता है। नीतियों से मार्ग निर्धारण होता है। नीतियां दोष पूर्ण होने पर भटकाव आता है। परिणामतः देश की राजधानी से जम्मू कश्मीर जाने की चाहत वाले भी मुंबई, कोलकाता या तिरुवनंतपुरम पहुंच जाते हैं।

जन–जमीन–जंगल–जानवर परस्पर पूरक है। इसके आधार पर ही सुख–समृधि का मार्ग प्रशस्त होता है। इनमें परस्पर शत्रुता के विचार से विग्रह –अशांति उत्पन्न होती है। भारत से वनों को छीन कर अपनी सैरगाह बनाने वालों ने इस सिद्धांत को नकार दिया तथा इन चारों को एक दूसरे का शत्रु निरूपित कर दिया। वे ही मानव एवं बाघों के मध्य इसे संघर्ष से संबोधित करते हैं, जबकि संघर्ष शब्द के प्रयोग का कोई आधार नहीं है। मानव एवं बाघों के संघर्ष का कारण पर्यावासो एवं निर्धारित क्षेत्र की कमी, भूख –प्यास की व्याकुलता एवं उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आना भी स्वाभाविक है। इसी का परिणाम है कि राष्ट्रीय उद्यान– बाघ परियोजना रणथम्भोर में दो माह की अवधि में ही बाघों ने तीन मानवों की जीवनलीला समाप्त कर दी। तथाकथित पर्यावरणविद् सैरगाह छिन जाने की आशंका से इस अटल सत्य को खंडित करने का प्रयास करते रहते हैं।

भारत के ग्रामीण समाज में दया भाव कूट–कूट कर भरा है। वे जीव मात्र में ईश्वर के दर्शन करते हैं। जीव हिंसा को पाप समझते हैं। जब तक वे वनों की रक्षा करना अपना दायित्व समझते थे तब तक वन अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित थे। इस दृष्टि से अनेक देवताओं के नाम से वनों की पहिचान है। सवाई माधोपुर राष्ट्रीय उद्यान रणथंभोर कठूली नाम के गांव में 'भैरू जी का वन' नाम से स्थित जंगल के वृक्षों को कोई छूता भी नहीं था। इतना ही नहीं तो अनेक दुर्लभ जीवों के अंगों को व्यापार में पैसा कमाने का साधन बनाया। आज भी वन विभाग में मांसाहारियों को नौकरी से रोकने का कोई प्रावधान नहीं है। राजस्थान में एक खेजड़ी के पेड़ को बचाने के लिए 263 शहीद हो गए। फिल्मीजगत की हस्ती को हिरण शिकार में न्यायालय में विचारण का सामना करना पड़ा। यह भारतीयता से औत–प्रोत विचार है। रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में से 16 गांवों का विस्थापन किया गया, उसके तत्काल बाद शिकार की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई।

उन्हीं गांवों में से 75 वर्ष की आयु पार कर चुके छीतर लाल गुर्जर नेताजी अनुभव के आधार पर बताते हैं कि बाघ और ग्रामीण एक साथ रहते थे। मानव को देखकर बाघ बचकर निकल जाता था तथा मनुष्य भी बाघों को देखकर बचकर निकल जाते थे। बाघ एवं मानव में आपसी समझ थी, इसीलिए एक बार अचानक बाघ के पास जा धमके तो बाघ ने आंखें खोली और वह रास्ते–रास्ते दूसरी ओर चला गया। तब भी कुछ वनकर्मी तो स्वयं को नायक तथा शाकाहारी ग्रामीणों को खलनायक सिद्ध करने में रत रहते हैं। वे इस प्रकार की रणनीति के कारण वन्य प्रेमी की प्रतिष्ठा से पैसा, पदोन्नति तथा पुरस्कार प्राप्त करते रहते हैं। वन एवं जैवविविधता प्राणी मात्र के जीवन का आधार है, इसलिए वन बचें एवं वन्य जीव सुरक्षित रहे, इसमें कोई भी असहमत नहीं है। जंगल के प्राणी एवं मानवों के मध्य दूरियों एवं वन कर्मियों एवं ग्रामीणों में संघर्ष दूषित मानसिकता एवं छद्मता पूर्ण व्यवहार का परिणाम है। अट्टालिकाओं में मूल्यवान लकड़ी के किवाड़, खिड़की, दरवाजे एवं फर्नीचर वन विभाग के बड़े अधिकारी होने का प्रतीक बन चुका है। पहरेदार ही संदेह के कटघरे में खड़े हो तो सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है।

वर्तमान में चल रही वन नीति के कारण वनों के पड़ोस में जंगली सूअर, रोजडे, बन्दर जैसे जानवरों के कारण मक्का, मूंगफली, मूंग, गन्ना के अतिरिक्त शकरकंद, आलू जैसे जमीकंदो की खेती समाप्त हुई। वहीं बाघ जैसे जानवरों के हिंसक होने से किसान फसलों की रखवाली पर जाने से डरने लगे हैं, इससे फसल उत्पादन विपरीत रूप से प्रभावित होता है। वन नीति बनाने वालों ने इस प्रकार की नीतियों को विकल्पहीनता दर्शित किया हुआ है। जबकि झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले के गांव लोचेर के मीनू महतो की परामर्शपूर्ण पुकार पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी तत्कालीन जिला कलेक्टर सुधीर प्रसाद ने उनके गांव की 6 एकड़ वन विभाग की भूमि पर वर्ष 1994 में मालदा आम के 300 पौधे वन विभाग के अधिकारियों द्वारा लगवाए थे। उनमें से लगभग आधे पौधे मर गए, तब गांववासियों ने उनके स्थान पर बीजू आम रोप दिए थे। इनके पकने के बाद पूरा गांव आम–आम है। इसी राज्य के बहरागोड़ा पहाड़ पर काजू और नेतरहाट के नीचे तराई क्षेत्र में नाशपाती के पौधे बड़े पैमाने पर लगाए गए। एक ही वर्ष में 400 से लेकर 500 मेट्रिक टन नाशपाती कोलकाता तक बिकने जाती है। जिससे सभी ग्रामीण लाभान्वित होते हैं। आकाशीय बिजली गिरने के कारण होने वाली मौतो से सुरक्षा का पेड़ श्रेष्ठ उपाय है। जब वनों के साथ व्यक्ति एवं गांव का हित जुड़ जाता है तो पूरा गांव ही सुरक्षा कर्मियों के रूप में खड़ा हो जाता है। भारत उन देशों में से एक है, जिनके पास वन प्रबंधन की वैज्ञानिक प्रणाली है। जन भागीदारी से वन एवं वन आच्छादित क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है। कृषि भूमि में वन आवरण के रूप में खेती किए जाने को वन आच्छादन में सम्मिलिति किया जाना श्रेयस्कर है।

भारत में कुल भूभाग में से एक तिहाई वन क्षेत्र था। वर्तमान में 25.7 प्रतिशत रह गया। देश में 45,000 से अधिक प्रकार के पौधे तथा 91 हजार प्रकार के जानवर है। विश्व के चार प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पॉट में से हिमालय, पश्चिमी घाट, पूर्वी उत्तर क्षेत्र और निकोबार दीप समूह है, जो वैश्विक संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। विश्व में भारत सबसे अधिक जैव विविधता वाले देशों में से एक है। यद्यपि उसका क्षेत्रफल संपूर्ण पृथ्वी का 2.4 प्रतिशत ही है। प्रोजेक्ट टाइगर के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में बाघ संरक्षण के लिए अमृतकाल के दृष्टी पत्र के अनुसार 27 नवंबर 2023 तक भारत में राष्ट्रीय उद्यान 106, वन्य जीव अभ्यारण 573, संरक्षण रिजर्व 115 तथा सामुदायिक रिजर्व 220 सहित संरक्षित वन क्षेत्र की संख्या 1014 है। यह देश के कुल क्षेत्रफल का 5.32 प्रतिशत है। बाघ अभारण्यों की संख्या 50 तथा क्षेत्रफल 78,000 वर्ग किलोमीटर है। यह देश के भौगोलिक क्षेत्र का 2.30 प्रतिशत है। वर्ष 2025 में 50 से बढ़कर बाघ अभयारण्यो की संख्या 58 हो गयी। नवीनतम रानी दुर्गावती बाघ अभयारण्य मध्य प्रदेश में है। भारत का पहला वन्य जीव अभयारण्य 1936 में जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान था, जिसे 'हेली नेशनल पार्क' के नाम से जाना जाता था। अखिल भारतीय बाघ अनुमान 2022 के पांचवें चक्र के अनुसार भारत में बाघों की संख्या औसत 3,682 है, जो विश्व के कुल बाघों की संख्या का 70 प्रतिशत है। उनकी वार्षिक वृद्धि दर 6.01 प्रतिशत है।

हाथियों की संख्या 2018 में 26,786 थी, जो बढ़कर वर्ष 2022 में 29,964 हो गई। इनके लिए देश के 14 राज्यों में 33 हाथी रिजर्व है। एशियाई हाथियों की रक्षा के लिए वर्ष 1992 से 'प्रोजेक्ट एलिफेंट' आरंभ किया गया था। लुप्तप्राय बबर शेर गुजरात के गिर राष्ट्रीय उद्यान में है, उनकी संख्या वर्ष 2010 में 411 थी, जो 2020 में बढ़कर 674 हुई। लुप्तप्राय और दुर्लभ प्रजातियों में बाघ, हाथी, हिमालय तेंदुआ आदि को वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची एक में सूचीबद्ध कर उच्चतम स्तर की सुरक्षा प्रदान की गई। 18 दिसंबर 2024 से भारत में प्रोजेक्ट डॉल्फिन के अधीन असम में पहली बार गंगा नदी डॉल्फिन की पहल की गई। डॉल्फिनों की 90 प्रतिशत जनसंख्या भारत में ही पाई जाती है। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में 2,613 बड़े एक सींग वाले गेंडे के घर है। यह विश्व के एक सींग वाले गेंडो की संख्या का लगभग 68 प्रतिशत है। घड़ियालो की रक्षा के लिए चम्बल अभयारण्य है।

बाघों के कारण 12 राज्यों में वर्ष 2020 से 2024 तक 4 वर्ष की अवधि में 378 मानवों की मृत्यु हुई। दूसरी और वर्ष 2022 से 2025 तक 3 वर्ष की अवधि में शिकार एवं मारे जाने वाले बाघों की संख्या 38 है। एक वर्ष के औसत के अनुसार मानवों की मृत्यु की संख्या 94 तथा बाघो की मृत्यु की संख्या 13 है। हाथियों के कारण 16 राज्यों में वर्ष 2019–20 से वर्ष 2023–24 तक की 5 वर्षों की अवधि में 2,869 मानवों को काल का ग्रास बनना पड़ा। तेंदुओं की सबसे अधिक संख्या मध्य प्रदेश में 3,907 है तथा दूसरे स्थान पर महाराष्ट्र में 1,985 है। वर्ष 2019–20 से वर्ष 2023– 24 तक की अवधि में महाराष्ट्र की गणना के अनुसार 99 व्यक्तियों को तेंदुओं ने मौत के मुंह में पहुंचाया। संरक्षित जानवरों के कारण होने वाली मानव मौतो की संख्या 3,346 है। बाघों को छोड़कर तेंदुआ सहित अन्य वन्यजीवों के संबंध में जानकारी भारत सरकार के स्तर पर संकलित नहीं की जाती है।

15 वें वित्त आयोग ने वन्य जीव संरक्षण के लिए 2602.98 करोड रुपए के परिव्यय की स्वीकृति दी थी, जिसमें 236.258 करोड रुपए हाथी रिज़र्व के लिए आवंटित किए गए। केंद्रीय बजट 2025–26 में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को 3,412.82 करोड रुपए आवंटित किए गए, जो 2024–25 के संशोधित अनुमानित बजट से 9 प्रतिशत अधिक है। इस बजट में से वन्य जीव पर्यावासो के एकीकृत विकास के लिए 450 करोड रुपए के अतिरिक्त प्रोजेक्ट टाइगर और हाथी के लिए 290 करोड रुपए का आवंटन किया गया। यह कुल आवंटन का 64 प्रतिशत एवं यह वृद्धि 2024–25 के संशोधित अनुमानों से 18 प्रतिशत अधिक है। तब भी बजट में जन, पशुधन एवं फसलों को होने वाली क्षति की पूर्ति, मानव सुरक्षा एवं संरक्षण का शीर्षक ही नहीं है।

राष्ट्रीय वन नीति 1988 के संदर्भ में मंत्रालय ने मानव, वन्य जीव संघर्षों के प्रबंधन के लिए 6 फरवरी 2021 को परामर्शिका, फसलों को होने वाली क्षित सहित मानव वन्य जीव संघर्ष के प्रबंधन के लिए राज्यों को दिशा निर्देश 3 जून 2022 को एवं हाथी, गौर, तेंदुआ, सांप, मगरमच्छ, रीसस मैंकाक, जंगली सूअर, भालू, रोजेडे, काला हिरण के कारण होने वाले मानव – वन्य जीव संघर्ष को कम करने के लिए प्रजाति विशिष्ट दिशा निर्देश 31 मार्च 2023 को प्रसारित किये गये। संरक्षित क्षेत्र की प्रबंध योजनाओं को वैधानिकता प्रदान करने के लिए वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 में संशोधन कर संबंधित ग्राम सभा के साथ परामर्श को अनिवार्य किया गया।

वन्य जीवों के पर्यावासों की व्यवस्था, बाघों के कार्यकलापों को उनके पर्यावास के अंतर्गत सीमित करने, निर्धारित पर्यावासों की संख्या कम होने पर बाघों को अन्य संरक्षित क्षेत्र में भेज कर उनके बहिर्गमन को रोकने, बाघों के भटक जाने से उत्पन्न आपातकालीन स्थिति से निपटने, बाघों द्वारा पालतू पशुओं पर हमले की घटनाओं से निपटने, बचाव के लिए सामग्री एवं तंत्र संबंधी उपकरण उपलब्ध कराने के लिए वित्तीय सहायता भी सम्मिलित है। अवैध शिकार, पर्यावासों की हानि और मानव– बाघ संघर्ष को नियंत्रण में रखने के लिए 'राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण' का निर्माण किया गया है। मृत्यु या स्थायी अक्षमता के प्रकरणों में अनुग्रह राहत राशि 5 से बढ़कर 10 लाख रुपए की गई है। वन एवं वृक्ष संसाधनों की सुरक्षा, संरक्षण और प्रबंधन का दायित्व मुख्य रूप से राज्य एवं संघ राज्यों को सौपा हुआ है।

3 मार्च 2025 को संयुक्त राष्ट्र वन्यजीव दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की सातवीं बैठक गुजरात के गिर राष्ट्रीय उद्यान में हुई, जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की। जिसमें टाइगर, एलीफेंट, स्नो लेपर्ड के प्रोजेक्ट सहित अंतर्राष्ट्रीय 'बिग कैट्स एलायंस' बनाने का नया संदेश दिया गया किंतु जन, पशुधन एवं फसलों की क्षति की पूर्ति के संबंध में कानून बनाने की चर्चा नहीं की गई। देश की सर्वोच्य स्तरीय इस बैठक में भी दोषपूर्ण पाश्चात्य विचार को छोड़कर भारतीयता को अनदेखा किया गया, जिससे पेंडुलम की भांति आसंतुलन जस का तस रहा।

–रामपाल जाट,
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
किसान महापंचायत

'पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय शिविर से आमजन को मिल रही राहत'

शिविर में आमजन की समस्याओं सहित नामांतरण के 22 प्रकरणों का निस्तारण किया

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के शाहपुरा क्षेत्र की ग्राम पंचायत गिरडिया में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा 2025 के तहत शिविर का आयोजन किया गया।

जानकारी के अनुसार शिविर प्रभारी विश्वजीत सिंह उपखंड अधिकारी शाहपुरा के नेतृत्व में ग्राम पंचायत मुख्यालय गिरिडीया पर शिविर का आयोजन हुआ जिसमें सभी विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे और आमजन की समस्याओं का मौके पर त्वरित समाधान किया गया। शिविर में राजस्व विभाग द्वारा मौके पर विभाजन के 2 तथा रास्तों के 5, सीमाज्ञान के 6, पत्थरगढ़ी के 3 व नामांतरण के 22 प्रकरणों का निस्तारण किया गया। चंबल पेयजल परियोजना के तहत मौके पर प्राप्त आवेदन में ग्रामों में पेयजल की पाइप लाइन में हो रहे लीकेज को शिविर प्रभारी के निर्देश अनुसार ठीक करवाया गया। बिजली विभाग द्वारा लाइन के आसपास पेड़ों से टहनियां की वजह से ट्रिपिंग की समस्या होने के समाधान किया गया। शिविर में चिकित्सा विभाग द्वारा प्रार्थी पप्पू भील को अक्षय रोग किट वितरित किया गया। शिविर प्रभारी ने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय शिविर से आमजन को राहत मिल रही है, किसानों सहित अन्य जरूरतमंद लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान हो रहा है। शिविर में समाजसेवी जीएसएस अध्यक्ष देवीलाल गुर्जर, वीडीओ शंकरलाल मीणा, रेवेन्यू इंस्पेक्टर ओमप्रकाश योगी, पटवारी हिम्मत सिंह व गोविन्द सिंह आदि सहित कई ग्रामीणा भी उपस्थित रहे।

अजमेर में जर्जर भवनों से हादसे का अंदेशा

- **नगर निगम प्रशासन नहीं दे रहा ध्यान, मानसून की बरसात में भवनों के गिरने का डर**
- **कई मकानों की दीवारों में दरारें आ चुकी हैं, छतें जर्जर हालत में हैं**

अजमेर, (कासं)। देश व प्रदेश में सक्रिय हुए मानसून के चलते तेज बरसात में जर्जर भवन गिरने का खतरा अधिक बना रहता है। जर्जर भवनों के आसपास रहने वाले लोगों में दहशत का माहौल व्याप्त है। अजमेर शहर के आगरा गेट, नया बाजार, पट्टी कटला सहित आसपास के क्षेत्रों में आधा दर्जन से अधिक जर्जर भवन स्थानीय लोगों के लिए खतरा बने हुए हैं। मंगलवार को क्षेत्रवासियों ने कहा कि कई मकानों की दीवारों में दरारें आ चुकी हैं, छतें जर्जर हालत में हैं और तेज बारिश या हवा में उनके गिरने की आशंका लगातार बनी हुई है।

आरागेट क्षेत्र की स्थानीय निवासी पार्वती देवी ने बताया कि आगरागेट क्षेत्र के पुराने मोहल्लों में कई मकान 50 से 80 वर्ष से भी अधिक पुराने हैं और वर्षों से मरम्मत के अभाव में जर्जर हो चुके हैं। शारदा देवी ने कहा कि बारिश के मौसम में स्थिति और खतरनाक हो जाती है। बच्चों और बुजुर्गों को लेकर सबसे ज्यादा चिंता रहती है, क्योंकि कोई भी हादसा बड़ी जान माल की हानि का कारण बन सकता है। पूर्व में जर्जर भवन गिरने के हादसे हो चुके हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि समस्या के समाधान के लिए कई बार नगर निगम को शिकायतें दी जा चुकी हैं। क्षेत्रवासियों ने निगम अधिकारियों को लिखित में भी अवगत कराया है कि जर्जर भवनों का गिरना कभी भी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकता है, लेकिन इसके बावजूद अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। निगम के अधिकारियों की उदासीनता के कारण लोग रोजाना खतरे में जीने को मजबूर हैं। उन्होंने निगम से तत्काल प्रभाव से जर्जर भवनों का सर्वे कर उन्हें गिराने या मरम्मत कराने की मांग की है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 2 जुलाई, 2025

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 11:07 तक, वारियान योग सायं 5:46 तक, वणिज करण दिन 11:59 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 11:07 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा दिन 11:59 से रात्रि 1:03 तक है। आज सूर्य पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:06 तक, शुभ 10:43 से 12:31 तक, चर 3:55 से 5:38 तक, लाभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:20

मेष

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन

घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर–परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।

मीन

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।